अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता का अध्ययन''

डॉ अबधेश सिंह
एफ0 एस0 वि0वि0 शिकोहाबाद

भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता की जड़े काफी गहरी तथा विस्तृत हैं। भारत की सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। प्राचीनकाल से मध्यकाल तथा मध्यकाल से आधुनिक काल तक आते–आते समाज में अनेकों परिवर्तन दृष्टिगोचर होते देखे गये हैं।

समाज में होने वाले परिवर्तनों के फलस्वरूप दो तरह के लोग एक रूढ़िवादी या अपरिर्वतनशील तथा दूसरा प्रगतिशील या आधुनिक पाये जाते हैं। साथ ही अनेकों ऐसे लोग भी होते हैं जो समय के अनुसार रूढ़िवादी या प्रगतिशील होने का ढोग करते हैं।

झा (2004) रूढ़िवादी य अपरिवर्तनशील विचारधारा वाले लोग किसी भी प्रकार के परिवर्तन के विरोधी होते हैं। जैसे–छुआछूत,बालविवाह, मृत्यु भोज, पर्दाप्रथा, महिलाओं के बाहर निकलने पर प्रतिबन्ध, नरक–स्वर्ग की कल्पना, साधुसन्तों की सेवा से अगले जन्म में सुख की आशा, पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार जन्म पर विश्वास, बाढ़, अकाल आदि रूढ़िवादिताएईश्वर के क्रोधसे आती हैं। साथ ही यह अर्न्तजातीय विवाह के भी विरोधी होते हैं।

जबकि प्रगतिशील विचाराधारा के लोग बदलते वक्त के साथ होने वाले परिवर्तनों को स्वीकार करते हैं। यह वर्ग वैज्ञानिक तार्किक एवं बुद्धिवादी विचारों से प्रेरित होता है। स्वस्थ सामाजिक परम्पराओं के विकृत स्वरूप को त्यागकर आधुनिक तार्किक दृष्टिकोंण से स्वीकृत परम्पराओं को स्वीकार करता है। यही कारण है कि प्रगतिशील लोग अस्पृश्यता, बालविवाह, जाति प्रथा, पर्दाप्रथा, मृत्यु भोज जैसी कुरीतियों का विरोध करते हैं।

भारत एक विकासशील देश है। जो राष्ट्र और सामाजिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। जीवन के पारम्परिक ढ़ंगों के स्थान पर आधुनिक दृष्टिकोंण स्थान लेता जा रहा है। व्यक्ति के दृष्टिकोंण से प्रगतिशीलता या आधुनिकता स्पष्ट झलकती हैं प्रगतिशीलता या आधुनिकता वह मनोवृत्ति है जिसके द्वारा व्यक्ति तीव्रता से बदलती सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियों से आंतरिक रूप से समायोजन कर लेता है।

शोधकर्त्री ने इसका सत्यरूप जानने की जिज्ञासा के कारण प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता के अध्ययन को शोध का विषय बनाया।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

मानव व्यक्तित्व एक स्थिर, अपरिवर्तनशील इकाई न होकर विशिष्ट मनोदैहिक गुणों का एक गत्यात्मक संगठन है। सम्पूर्ण मनुष्य वंषानुक्रम एवं वातातवरण की अन्तरप्रक्रिया का परिणाम है। विकासक्रम में धीरे–धीरे शिशु स्वयं तथा अन्य व्यक्तियों एवं पदार्थों में अन्तर का बोध करने लगता है। इस प्रकार क्रमिक रूप से अहम या मैं का विकास होता है। यही अहम् व्यक्ति के व्यक्तित्व का केन्द्र बिन्दु है जो विभिन्न जीवन के अनुभवों का मूल्यांकन तथा संगठन करता है। व्यक्ति का अहम वास्तविकता भले तथा बुरे का विचार विकसित करने तथा अपनी योग्यताओं का आस–पास के वातावरण के सन्दर्भ में मूल्यांकन करने वाला व्यक्तित्व का केन्द्र बिन्दु है। ये जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त जीवन को एक अविच्छिन्न धारा के रूप में समझने में सहायक है क्योंकि इसी के आधार पर व्यक्ति भूतकाल के अनुभवों का स्मरण, वर्तमान का ज्ञान, भविष्य के सम्बन्ध में सुलझाने का सतत प्रयास करता है।

दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि अधिक या सामान्य बुद्धि के बालकों में प्रगतिशीलता की मात्रा कम या अधिक होगी या अधिक और सामान्य बुद्धि के बालक प्राचीन परम्पराओं या मान्यताओं को कम

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

या अधिक मानने वाले होंगे। साथ ही साथ प्रगतिशीलता में क्या लिंग भेद पाया जाता है अर्थात क्या लड़कों की तुलना में लड़कियॉ अधिक प्रगतिशील होती हैं। यह जानने की आवश्यकता महसूस हुई एतद् निमित्त उपलब्ध सम्बन्धित साहित्य पर दृष्टिपात किया गया। प्रगतिशीलता और रूढ़िवादिता से सम्बन्धित निम्न अध्ययन प्राप्त हुए – सादत अनवर आदि ने(1999) रूढ़िवादिता एवं दुश्चिंता पर अध्ययन किया। अग्रवाल(1999) ने हिन्दू तथा मुस्लिम महिलाओं में आधुनिकता पर अध्ययन किया है। गर्ग(2003), ने बुद्धि एवं प्रगतिशीलता पर अध्ययन किया, जिन्दल(2005) ने ग्रामीण व शहरी छात्रों में आधुनिकता का अध्ययन किया। प्रमिला(2009) ने बरेली जनपद की मुस्लिम महिलाओं पर आधुनिकता के प्रभाव का अध्ययन किया। शर्मा (2011) ने छात्र तथा छात्राओं में अनेक आर्थिक स्तर के आधार पर आधुनिकता का अध्ययन किया।

अध्ययन का शीर्षक

''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता का अध्ययन''

पदों की परिभाषा

स्नातक स्तर–स्नातक स्तर से यहॉ तात्पर्य महाविद्यालय में कक्षा बी0 ए0 तथा बी0 एस0 सी0 में अध्ययनरत विद्यार्थियों से है।

विद्यार्थी– कक्षा बी0 ए0 तथा बी0 एस0 सी0 में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राऐं

प्रगतिशीलता–प्रगतिशीलता का अर्थ सामान्य रूप से व्यक्ति के स्वभाव और प्रवृत्ति के अधिक यर्थाथवादी, व्यावहारिक व लचीलेपन से है। समाज में होने वाले परिवर्तन को स्वीकार कर लेना या स्वीकार करने को मानसिक रूप से तैयार रहना प्रगतिशीलता का सूचक है।

रूढ़िवादिता–रूढ़िवादिता का अर्थ सामान्य रूप से व्यक्ति के स्वभाव और प्रवृत्ति के अर्न्तमुखी, व्यवहार व लचीलेपन का न होना है। समाज में होने वाले परिवर्तनों को स्वीकार करने को तैयार न हो पाना। समाज में व्याप्त रूढ़ियों में ही विष्वास करना, परिवर्तन की अपेक्षा न करना है। परिवर्तन का विरोध करना ही रूढ़िवादिता का सूचक है।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. लिंग भेद के अनुसार स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता का अध्ययन करना।
2. निवास स्थान के आधार पर स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता का अध्ययन करना।
3. शैक्षिक विचार धारा के आधार पर स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. लिंगभेद के अनुसार स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादित में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. निवास स्थान के आधार पर स्नाक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता में अन्तर नहीं है।
3. शैक्षिक विचार धारा के आधार पर स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिसीमन–प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता का अध्ययन करना है।प्रस्तुत अध्ययन में समय, धन तथा साधनों की सीमितता के कारण जनपद फिरोजाबाद में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत मात्र 04 महाविद्यालयों में(ग्रामीण +शहरी) के कुल 100 विद्यार्थियों पर किया गया है। जिसमें कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी सम्मिलित हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

अध्ययन का अभिकल्प–किसी भी अध्ययन का अभिकल्प वैज्ञानिक अनुसंधान प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। अध्ययन अभिकल्प की रचना से ही अध्ययन से सम्बन्धि प्रदत्तों का संकलन एंव विश्लेषण विश्वसनीयता एवं वैधता के साथ किया जा सकता है।

अध्ययन विधि–प्रस्तुत अध्ययन विधि का उद्देश्य स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता का अध्ययन करना था।

जनसंख्या एवं न्यादर्श–प्रस्तुत अध्ययन में फिरोजाबाद जनपद में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत 2023–2024 सत्र केकुल 100 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण प्रस्तुत शोधकार्य में डॉ0 वी0 के0 मित्तल द्वारा निर्मित एवं प्रमाणीकृत प्रगतिशील रूढ़िवादी मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय–प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त प्रदत्तों से निष्कर्ष निकालने हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' मान की गणना की गयी।

ऑकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध परीक्षण का प्रशासन एवं मूल्यांकन करने के उपरान्त मूल ऑकड़े प्राप्त होते हैं। मूल ऑकड़े स्वयं में तथा समूह के सन्दर्भ में निर्णय प्राप्त करने के लिए सक्षम नहीं होते। अतः परीक्षण के प्रशासन एवं फलांकन के पश्चात प्रदत्तों का व्यवस्थापन किया जाता है। मूल प्रदत्तों का स्वयं में कोई अर्थ नहीं होता, जब तक कि उनका सांख्यिकीय विश्लेषण न किया जाये। ऑकड़ों का सरलीकरण करके उनकी व्याख्या हेतु पुर्ननिर्धारण करना अनिवार्य है। अनुसंधान से सम्बन्धित ऑकड़ों के विश्लेषण के साथ ही व्याख्या या विवेचन की प्रक्रिया होती है। प्राप्त परिणाम को निम्नवत प्रस्तुत किया गया है–

1. लिंग भेद के अनुसार स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. निवास स्थान के आधार पर महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. शैक्षिक विचार धारा के आधार पर महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं में प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता का विवरण

विद्यार्थी	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान
छात्र	50	10.22	2.37	2.63
छात्राएं	50	10.91	2.51	

उपरोक्त तालिका से विदित होता है कि छात्र एवं छात्राओं की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता का मध्यमान क्रमशः 10.22 तथा 10.91 एवं मानक विचलन क्रमशः 2.37 तथा 2.51 पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि छात्रों की तुलना में छात्राएं अधिक प्रगतिशील थी। छात्र एवं छात्राओं की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता के मध्य टी–मान 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गयी। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में लिंगभेद के आधार पर प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता में सार्थक अन्तर था अर्थात् छात्राएं छात्रों की तुलना में अधिक प्रगतिशील थीं। दूसरे शब्दों में छात्र छात्राओं की तुलना में रूढ़िवादी थे।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

प्रस्तुत अध्ययन में छात्राएं छात्रों की तुलना में अधिक प्रगतिशील पायी गयी। इसका सम्भावित कारण यह हो सकता है कि जिन क्षेत्रों से दत्त संकलन किया गया है। वहॉ केवल पढ़े लिखे परिवार की लड़कियॉ ही स्नातक स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने हेतु अग्रसर हैं। उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि भी मजबूत होती है। इसके विपरीत निम्न पारिवारिक पृष्ठभूमि की बालिकाओं के लिए शिक्षा एक सपना होती है तथा उनके माता–पिता के अनुसार शिक्षा बालिकाओं के लिए आज भी आवश्यक नहीं होती, क्योंकि वह मजदूरी से परिवार का भरण–पोषण ही कर पाते हैं।

वहीं दूसरी ओर शैक्षिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि के बालक भी स्नातक स्तर की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। सम्भवतः इसी कारण छात्राएं अधिक प्रगतिशील तथा छात्र कम प्रगतिशील पाये गये।

तालिका

निवास स्थान के आधार पर विद्यार्थियों मेंप्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता का विवरण

विद्यार्थी	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान
ग्रामीण	50	9.65	2.19	7.91
शहरी	50	11.58	2.35	

तालिका से विदित होता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता का मध्यमान क्रमशः 9.65 तथा 11.58 पाया गया। इस मध्यमान से स्पष्ट होता है कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक प्रगतिशील थे। ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता का मानक विचलन क्रमषः 2.19 तथा 2.35 पाया गया। मानक विचलन से स्पष्ट होता है कि शहरी विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता में ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक असमानता थी। ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता का टी– मान 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकर की गयी। इससे निष्कर्ष निकलता है कि निवास स्थान के आधार पर स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता में सार्थक अन्तर था। शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक प्रगतिशील पाये गये।

जिन्दल (2005) ने अपने अध्ययन में पाया कि शहरी महाविद्यालयों के छात्र ग्रामीण महाविद्यालयों के छात्रों से अधिक आधुनिक पाये गये। यह परिणाम प्राप्त अध्ययन के परिणामों के समान हैं जबकि शर्मा (2011) तथा सक्सेना (1988) के अध्ययन के परिणाम प्राप्त परिणाम से भिन्न है।

प्रस्तुत अध्ययन में शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक प्रगतिषील पाये गये हैं। इसका सम्भावित कारण यह हो सकता है कि शहरी महाविद्यालयों में अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा तथा वहॉ अध्ययनरत छात्रों की पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं वातावरण ग्रामीण विद्यालयों की तुलना में प्रगतिशीलता से सकारात्मक रूप से सम्बन्धित होते हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

तालिका

शैक्षिक संधारा के आधार पर विद्यार्थियों में प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता का विवरण

विद्यार्थी	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान
कला वर्ग	50	10.64	2.28	0.72
विज्ञान वर्ग	50	10.45	2.58	

तलिका से विदित होता है कि कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता का मध्यमान क्रमशः 10.64 तथा 10.45 एवं मानक विचलन क्रमशः 2.28 तथा 2.58 पाया गया । कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता के मध्य टी–मान 0.72 पाया गया। यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार नहीं की गयी इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शैक्षिक संधारा के आधार पर स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता में सार्थक अन्तर नहीं है। अर्थात कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी समान रूप से प्रगतिशील पाये गये।

इसका सम्भावित कारण यह हो सकता है कि कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक पृष्ठभूमि लगभग समान तथा महाविद्यालयों का वातावरण समान था जिस कारण वे समान रूप से प्रगतिशील एवं रूढ़िवादी पाये गये।

साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि भारत में संचार क्रान्ति के फलस्वरूप सूचनाओं का आदान–प्रदान आसान हो गया है तथा विद्यार्थी चाहे वह किसी भी शैक्षिक संधारा का हो सूचनाएं आसानी से प्राप्त कर लेता है। फलस्वरूप समान रूप से प्रगतिशीलता सम्भावित है।

निष्कर्ष

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता में सार्थक अन्तर पाया गया। छात्राएं छात्रों की तुलना में अधिक प्रगतिशील पायी गयी।
2. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता में सार्थक अन्तर पाया गया। शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक प्रगतिशील पाये गये।
3. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढिवादिता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अर्थात कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादी विचारों में समानता थी।
4. शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक स्तर पर अध्ययनर विद्यार्थियों की प्रगतिशीलता एवं रूढ़िवादिता का अध्ययन किया गया है। अतः अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर इनमें प्रगतिशील दृष्टिकोंण विकसित करने हेतु प्रस्तुत सुझाव निम्नवत् हैं–

1. शिक्षार्थी, शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है। इनका दृष्टिकोंण विकसित होना चाहिए तभी यह उचित परिवर्तनों को स्वीकार करेंगे इसके लिए शिक्षा व्यवस्था में एक व्यापक दृष्टिकोंण को विकसित करने की आवश्यकता है। प्रगतिशील दृष्टिकोंण एवं उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षक ही इस कार्य को कर सकते हैं। महाविद्यालयों में किसी भी प्रकार के रूढ़िवादी कार्यक्रम के आयोजन नहीं किये जाने चाहिए। ऐसा होने पर ही वे प्रगतिशील विचारों को स्वीकार कर समाज तथा देश की उन्नति में अपना योगदान देंगे।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 अग्रवाल एन0(1999) +2 स्तर की हिन्दू तथा मुस्लिम छात्राओं के मध्य आधुनिकता का अध्ययन, एवस्ट्रेक्ट आफ रिसर्च,(1997) आई0 ए0 एस0ई0 बरेलीः रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, वोल्यूम–1
2 अग्रवाल पी0 (1980) शिक्षित तथा अशिक्षित महिलाओं पर आधुनिकता का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, आगराः डॉ0 बी0 आर0 अम्बेडकर विश्वविद्यालय।
3 भटनागर ए0 बी0 (1992) मापन एवं मूल्यांकन, मेरठः आर0 लाल बुक डिपो।
4 बेस्ट जान0 डब्ल्यू(1963)रिसर्च इन एजूकेषन, नई दिल्लीः प्रिंटिस हॉलआफ इण्डिया, प्रा0 लि0।
5 भटनागर एस0(2003)बाल विकास एवं पारिवारिक सम्बन्ध मेरठः आर0 लाल बुक डिपो।